

Concept of Social Problem in Sociology

Dr. SHITAL SHARMA

Assistant Professor

Dept. of Sociology

S.T.D.G.D. College, Shahpur

A **social problem** in sociology refers to a condition or behavior that has negative consequences for large numbers of people and that is generally recognized as something that needs to be addressed. It involves issues that affect the well-being of individuals or groups in society and is often the subject of public concern and collective action.

Key Elements of a Social Problem

1. **Harmful to Society:**

A social problem causes suffering, inequality, or injustice to individuals or groups (e.g., poverty, unemployment, domestic violence).

2. **Socially Constructed:**

A condition becomes a social problem only when society defines it as undesirable and in need of change.

3. **Public Concern:**

It is not just an individual problem but one that affects a significant portion of the population and attracts attention from media, policymakers, and the public.

4. **Needs Collective Solution:**

Social problems require organized social action or intervention from institutions (government, NGOs, social movements).

Examples of Social Problems

- Poverty and economic inequality
- Gender discrimination
- Unemployment
- Substance abuse
- Domestic violence
- Environmental pollution
- Communalism and caste discrimination

Sociological Perspectives on Social Problems

1. **Functionalist Perspective:**

Sees social problems as disruptions to the social system that need to be resolved to restore stability (e.g., crime disrupts order, so laws are needed).

2. **Conflict Perspective:**

Argues that social problems result from inequality and power struggles (e.g., poverty is a result of exploitation by the elite).

3. **Symbolic Interactionist Perspective:**

Focuses on how social problems are defined and constructed through human interactions (e.g., the labeling of deviant behavior).

Conclusion

In sociology, a social problem is not just a personal trouble but a societal issue that reflects broader structural inequalities or dysfunctions. It requires critical analysis and collective efforts for resolution, and its understanding often varies based on social values, norms, and perspectives.

समाजशास्त्र में सामाजिक समस्या की अवधारणा

सामाजिक समस्या (Social Problem) समाजशास्त्र में एक ऐसी स्थिति या व्यवहार को कहा जाता है, जो बड़े पैमाने पर लोगों के लिए हानिकारक होता है और जिसे समाज के द्वारा एक चिंताजनक स्थिति मानकर उसके समाधान की आवश्यकता महसूस की जाती है। यह समस्या केवल व्यक्तिगत न होकर सामाजिक होती है और इसके समाधान के लिए सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता होती है।

सामाजिक समस्या की मुख्य विशेषताएँ

1. **समाज के लिए हानिकारक होती है:**

सामाजिक समस्या ऐसे हालात पैदा करती है जो लोगों की भलाई, सुरक्षा, और समानता को प्रभावित करते हैं। जैसे—गरीबी, बेरोजगारी, घरेलू हिंसा आदि।

2. **सामाजिक रूप से निर्मित होती है:**

कोई भी स्थिति तब सामाजिक समस्या मानी जाती है जब समाज उसे गलत या अस्वीकार्य समझता है।

3. **जनता की चिंता का विषय होती है:**

यह केवल एक व्यक्ति की परेशानी नहीं होती, बल्कि बड़ी संख्या में लोगों को प्रभावित करती है और इस पर सार्वजनिक चर्चा होती है।

4. **सामूहिक समाधान की आवश्यकता:**

सामाजिक समस्याओं का समाधान व्यक्तिगत नहीं, बल्कि सामाजिक, राजनीतिक, और संस्थागत स्तर पर किया जाता है।

सामाजिक समस्याओं के उदाहरण

- गरीबी और आर्थिक असमानता
- बेरोजगारी
- लैंगिक भेदभाव
- मादक पदार्थों का दुरुपयोग
- घरेलू हिंसा
- पर्यावरण प्रदूषण
- जातीय भेदभाव और साम्प्रदायिकता

सामाजिक समस्याओं पर समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण

1. **कार्यात्मक दृष्टिकोण (Functionalist Perspective):**
यह मानता है कि सामाजिक समस्याएँ समाज की व्यवस्था में असंतुलन के कारण उत्पन्न होती हैं और इनके समाधान से सामाजिक स्थिरता पुनः स्थापित होती है।
2. **संघर्ष दृष्टिकोण (Conflict Perspective):**
इस दृष्टिकोण के अनुसार सामाजिक समस्याएँ समाज में व्याप्त असमानता और शक्तिसंघर्ष का परिणाम हैं। जैसे—गरीबी का कारण शोषण है।
3. **प्रतीकात्मक अन्तःक्रियात्मक दृष्टिकोण (Symbolic Interactionist Perspective):**
यह दृष्टिकोण सामाजिक समस्याओं को मनुष्यों के बीच होने वाली बातचीत और लेबलिंग (Labeling) के आधार पर समझता है।

निष्कर्ष

समाजशास्त्र के अनुसार, सामाजिक समस्या केवल व्यक्तिगत कठिनाई नहीं, बल्कि सामाजिक ढांचे की विसंगतियों और असमानताओं का परिणाम होती है। इन समस्याओं को समझने और हल करने के लिए समाज को जागरूकता, नीति निर्माण और सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता होती है।